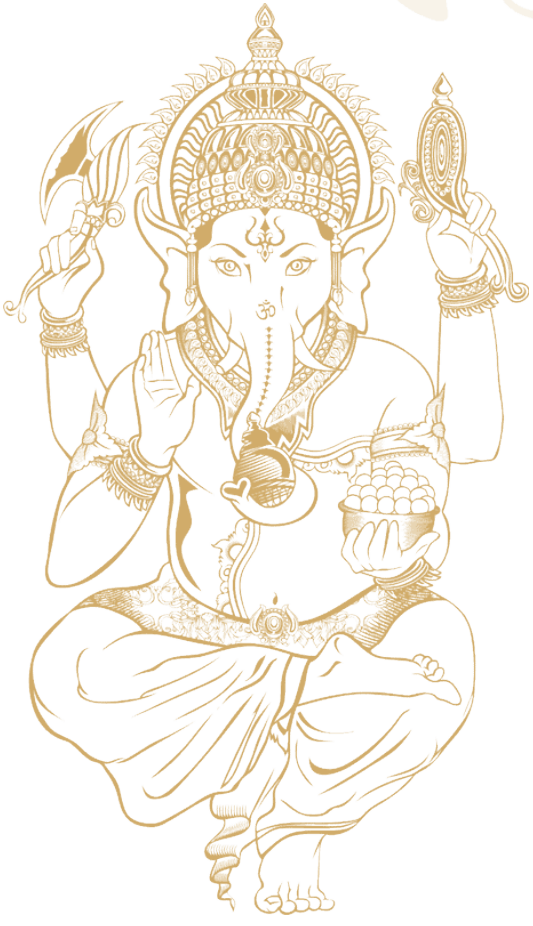

Sankaj son

01 Jun 2025

03:35 PM

Keonjhargarh

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121640201**

तिथि 01/06/2025 **समय** 15:35:00 **वार** रविवार **स्थान** Keonjhargarh **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:45
अक्षांश 21:38:00 उत्तर **रेखांश** 85:35:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:12:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	08:27:55 घं
वेलान्तर	00:02:08 घं
सूर्योदय	05:04:47 घं
सूर्यास्त	18:26:25 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	ज्येष्ठ
पक्ष	शुक्ल
तिथि	6
नक्षत्र	आश्लेषा
योग	व्याघात
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डो-डोभाल
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	चंद्र
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

बुध 4वर्ष 1मा 15दि

बुध

01/06/2025
17/07/2029

00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
01/06/2025
गुरु 07/11/2026
शनि 17/07/2029

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 11मा 19दि

भ्रामरी

01/06/2025
22/05/2026

00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
01/06/2025
संकटा 20/09/2025
मंगला 31/10/2025
पिंगला 20/01/2026
धान्या 22/05/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			09:49:17	तुला	स्वाति	1	राहु	गुरु	---	0:00			
सूर्य			16:57:42	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	शनि	शत्रु राशि	1.71	मातृ	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			26:45:49	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	गुरु	स्वराशि	1.39	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			27:04:12	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	गुरु	नीच राशि	1.40	आत्मा	भ्रातृ	जन्म
बुध		अ	19:44:48	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	केतु	मित्र राशि	0.95	भ्रातृ	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			03:52:52	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	शुक्र	शत्रु राशि	1.11	ज्ञाति	धन	साधक
शुक्र			01:07:08	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	सम राशि	1.28	कलत्र	कलत्र	सम्पत
शनि			06:18:04	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.18	पुत्र	आयु	अतिमित्र
राहु	व		29:45:29	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	चंद्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		29:45:29	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

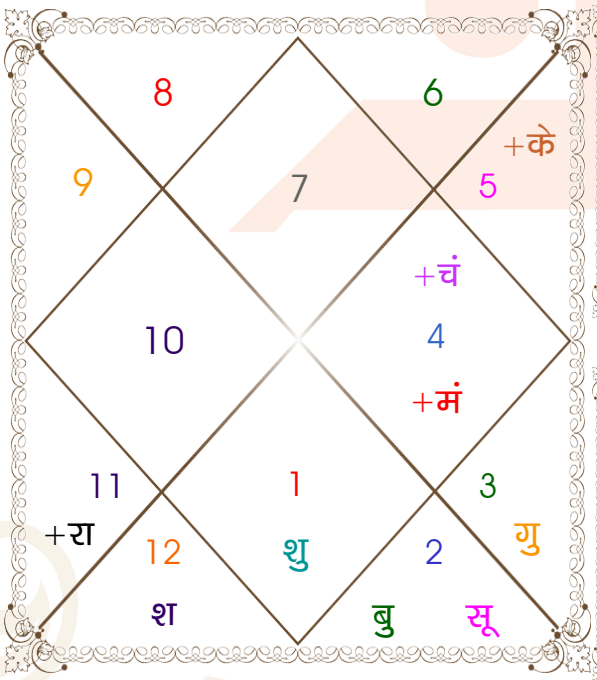

चन्द्र कुंडली

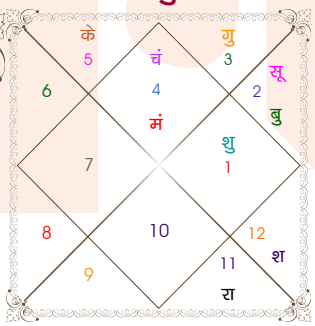

नवमांश कुंडली

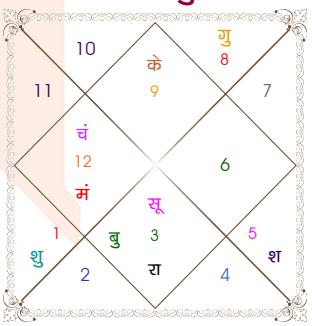

सर्वाष्टकवर्ग

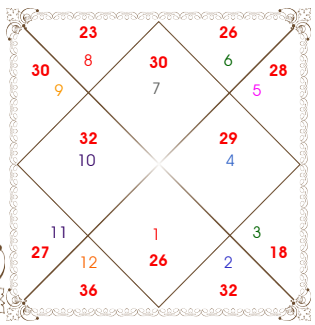

दशमांश कुंडली

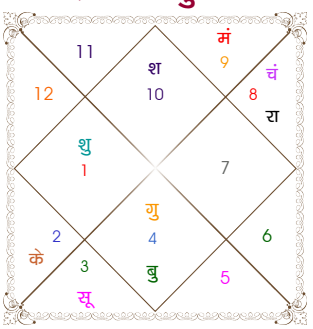

नक्षत्रफल

आपका जन्म आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ग श्वान, वर्ण विप्र, नाडी अन्त्य, योनि मार्जार तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "डो" से प्रारम्भ होगा।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों में की जाती हैं। इसके चतुर्थ चरण में उत्पन्न होने से जातक के पिता को कष्ट होता हैं। अतः इस दोष के निवारण के लिए जन्म समय में ही नक्षत्र की शान्ति शास्त्रोक्त विधि से अवश्य ही कर लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा पुनः 27 दिन के बाद जब यह नक्षत्र आवे तो जपे हुए मंत्रो के दशांश का हवन करना चाहिए। इससे अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। यह कार्य किसी योग्य विद्वान से करवाना चाहिए।

मंत्र - ऊँ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अर्थात आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप यात्राओं तथा भ्रमण में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करने वाले होंगे। आपके स्वभाव में उग्रता की प्रबलता रहेगी तथा अपनी उग्रता से व्यर्थ में ही अन्य जनों को कष्ट प्रदान करेंगे। आप अपने उत्तम धन को भी अनावश्यक कार्यों पर व्यय करने वाले होंगे। आपकी प्रवृति भी विलासयुक्त रहेगी।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट प्रकृति से लोगों को कष्ट देने वाला, अपने उत्तम धन को वुरे कर्मो में खर्च करने वाला, विलासी तथा कामातुर रहता है।

समाज में अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति आपका स्वभाविक आकर्षण रहेगा। आपका शरीर स्वस्थ रहेगा। साथ ही आप किसी भी व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर भी आप उसका अहसान अल्प मात्रा में ही मानेंगे। इसके साथ ही आप पहले सम्पन्न कार्यों को ही पुनः करने वाले होंगे।

लुब्धः खत्रजः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।

आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।
जातक दीपिका

अर्थात आश्लेषा में जन्मा मनुष्य लोभी, लंगडा, कमजोर शरीर वाला, कृतघ्न तथा किये गये कार्यो को करने वाला होता है।

भक्ष्य या अभक्ष्य पदार्थो में आप कोई भेद नहीं रखेंगे तथा जो भी सात्विक या तामसिक पदार्थ मिलेगा उसके भक्षण करने में शीघ्रता करेंगे। आपके कई कार्य कठोरता से पूर्ण होंगे। समयानुसार आप मिथ्याभाषण भी करेंगे। आप में दुष्टता का प्रभाव परिलक्षित होगा। अच्छे कार्यो की प्रवृति आप में मध्यम रूप से रहेगी तथा यत्नपूर्वक इन्हें सम्पन्न करते रहेंगे।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

अर्थात आश्लेषा में पैदा हुआ बालक सर्वभक्षी, कार्यकर्ता, कृतघ्न, ठग, दुर्जन तथा किये हुए कार्यो को करने वाला होता है।

आपकी बुद्धि भी मध्यम होगी तथा कृतज्ञतापूर्ण शब्दों को आप अधिकांश प्रयुक्त करेंगे। आपकी प्रकृति क्रोधी होगी तथा चाल चलन भी मध्यम श्रेणी का रहेगा। आप समाज से उचित सम्मान प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

अर्थात् आश्लेषा में उत्पन्न जातक मूढ़मति कृतघ्नतापूर्ण वाणी बोलने वाला, क्रोधी तथा दुराचारी होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यो में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

कर्क राशि में जन्म होने के कारण आप शरीर से स्वस्थ ही रहेंगे। आप अपने समस्त कार्यों को करने में निपुणता का प्रदर्शन करेंगे। तथा जीवन काल में प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके धनवान कहलाएंगे। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा। धार्मिक भावना भी आपके अर्न्तमन में विद्यमान रहेगी तथा सभी धार्मिक कार्यकलापों को आप श्रद्धा के साथ सम्पन्न करेंगे। अपने श्रेष्ठ संबंधियों तथा गुरूजनों के आप हमेशा प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरूष भी होंगे तथा अपने बुद्धिबल से सबको प्रभावित करेंगे। कभी कभी आप में क्रोध की भावना की अधिकता हो जाएगी एवं आप अपने को बहुत ही दुःखी भी अनुभव करेंगे। आप सन्मित्रों के मित्र होंगे तथा अन्य कार्य अथवा कलाओं के भी आप ज्ञाता होंगे। शारीरिक बल से आप मध्यम रहेंगे तथा अपने घर से दूर अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से प्रवास करेंगे।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वकः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ से युक्त रहेगी तथा आपका स्वरूप अलौकिक तेज से युक्त होकर दर्शनीय होगा। आप अपने मेहनत के द्वारा कमाए हुए धन से विपुल धन के स्वामी बनेंगे। ब्राहमणों तथा देवताओं के प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा भाव रहेगा। आप समयानुसार उनके प्रति अपने श्रद्धाभाव का प्रदर्शन करते रहेंगे। श्रेष्ठ कुल में जन्मे लोगों के प्रति आप के मन में वास्तविक श्रद्धा भाव रहेगा तथा उनको सेवा प्रदान करने में आप परम शन्ति तथा सन्तुष्टि की प्राप्ति करेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे तथा परिश्रम से इनका ज्ञान प्राप्त करेंगे। साथ ही अन्य कलाओं के विषय में भी आपको ज्ञान रहेगा। आपका आचरण श्रेष्ठ तथा अन्य जनों के लिए अनुकरणीय होगा। आपको फूलों की सुगन्ध तथा जल में क्रीड़ा करने से प्रसन्नता की अनुभूति होगी। इसके अतिरिक्त अपनी बुद्धिमता से आप समाज में विख्यात होंगे।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

आपका कंठ भाग थोड़ा स्थूल रहेगा तथा आप पूर्ण रूप से स्त्री जाति के वश में रहेंगे। आपके समस्त मित्र सद्गुणों से युक्त होंगे। आप बहुत भवनों के निर्माता होंगे अथवा बहुत से मकानों के स्वामी भी बन सकते हैं। आपका कद भी छोटा रहेगा तथा वक्रगति से शीघ्र चलना आपको रूचिकर लगेगा। साथ ही संतति में पुत्रों की संख्या आपकी अल्प रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकटिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार की सुख सम्पतियों का उपभोग करने वाले होंगे तथा ज्योतिष शास्त्र के आप ज्ञाता एवं श्रद्धालु होंगे तथा स्वभाव से सुशील रहेंगे। आप अपने सम्पूर्ण जीवन में चन्द्रकलाओं के समान क्षय वृद्धि को प्राप्त करते रहेंगे अर्थात जीवन उतार चढ़ावों से संघर्षपूर्ण रहेगा। आप स्नेहाभिभूत होकर ही वश में किये जा सकेंगे। दबाव या बलपूर्वक आपसे कोई कार्य नहीं करवाया जा सकेगा। मित्रों को आप पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। फलतः मित्रों के प्रिय रहेंगे। आपकी रूचि जीवपालन, उद्यान तथा जलाशयादि के निर्माण में भी निरन्तर बनी रहेंगी।

आवकद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्स्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

सौभाग्य शाली पुरूष होने का आपको गौरव प्राप्त होगा एवं आपके अधिकांश कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न होंगे। आपके कार्य धैर्यपूर्वक होंगे। शीघ्रता तथा उतावली करना आपके स्वभाव के विरूद्ध होगा। स्वगृह से आप युक्त रहेंगे तथा आपका अधिकांश समय भ्रमण करने या यात्रादि में व्यतीत होगा। आप का अन्य जनों से लौकिक व्यवहार विनयशील रहेगा। आप के अन्दर सैक्स की भी प्रबलता रहेगी। तथा अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनका हार्दिक आभार व्यक्त करेंगे। आप राज्य या सरकार के किसी उच्च पद को सुशोभित करने में भी सफल रहेंगे। सत्य का पालन करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक सत्य एवं प्रिय वाणी ही बोलेंगे जो सुनने वाले को रूचिकर लगेगी।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप यदा कदा व्यर्थ ही बोलेंगे तथा हृदय में दया एवं करूणा की भाव का अल्पता रहेगी। आप अपने कार्यों को साहस तथा धैर्य के साथ

सुसम्पन्न करने में सफल रहेंगे तथा साहसिक कार्यों को ही अधिक मात्रा में सम्पन्न करेंगे। शीघ्र छोटी छोटी बातों पर क्रोधित होना तथा उत्तेजित होना आपकी प्रकृति होगी तथा अपने कार्य सिद्धि के लिए आप कोई भी कार्य करने को तत्पर रहेंगे। शारीरिक बल से आप पूर्ण रहेंगे तथा अन्य जनों से छोटी छोटी बातों पर विवाद करने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। इस प्रकार अपने व्यवहार से समाज में आपका अधिकांश मनुष्यों से विरोध रहेगा। अतः अन्य जनों से विन्रमता तथा संयमपूर्वक व्यवहार करें।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी ग्रसित हो सकते हैं तथा देखने में आपका मुख दीर्घता से युक्त होगा। आपकी वाणी कभी कभी अत्यन्त ही कटु होगी जो श्रोता को अच्छी नहीं लगेगी। अतः मधुर शब्दों को अपने वार्तालाप में यत्नपूर्वक प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण आप प्रारम्भ से ही वीरता तथा साहस से युक्त रहेंगे। आप अपने कार्यों को करने में पूर्ण दक्षता का प्रदर्शन करेंगे। मधुर भोजन तथा मधुर पेय आपको अत्याधिक रूचिकर प्रतीत होंगे। तथा इनके प्रयोग से अत्यन्त आनन्द की अनुभूति करेंगे। आप स्वभाव से साहसी होंगे तथा साहस पूर्वक अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। परन्तु दुष्टता का समावेश कभी कभी आपके स्वभाव में हो जाता हैं। अतः कठोरकर्मो की तरफ भी आपका आकर्षण रहेगा।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे

तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार, तृतीय प्रहर तथा सिंह राशि का चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों में तथा उपरोक्त योगों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इन दिनों में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी सजग रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए तथा सोमवार का भी उपवास करना चाहिए। साथ ही श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र, चावल, श्वेत पुष्प

इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी एवं लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।